भजन

तर्ज... वो जब याद आये

धनी जब जगायें, क्यूं ना जाग जायें

राज ये गहरा कोई समझ ना पायें, आप भुलाएं आप जगाए

1) ये माया है बल वाली धनी,आपके ही हुकम से बनी है धनी

हुक्म से ही हमने देखा है इसको, चरणों में बैठ नहीं हम है आये

2) खेल में आई नजर हम देखने लगे,होश वाणी से आई तो कहने लगे

हुआ सब आप ही से सब होगा, दिखाया है आपने आप ही हटाये

3) अर्श रूहों की नजर जीव पर है पड़ी, काम हुकम करे हँसी रूह की उड़ी

हंसी आपकी पिया इससे भली है, दुनिया हँसे हमपे सहा ना ये जाये

4) शोभा रूहों की है एक दिली, रूहें तेरी पिया इश्क से है पली

नजर ख्वाब से धनी अब ये हटाओ, वाहेदत में पिया ये ना शोभाए